प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 52 * MAY – JUN 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	May01.mp3	31	⊕	भागवत्-१		भगवान के **नि॰नि॰, स॰नि॰, स॰सा॰ –** ३ स्वरूपों का निरूपण, भगवान गुणों के साथ भी गुणातीत रहते हैं, **जगत ब्रह्म का विवर्त है एवं अज्ञान का परिणाम है।**	Imp
2	May 02 .mp3	45	⊕	गर्भ॰+मा॰		ओंकार का स्वरूप निरू॰: व्याकरण+नाम-रूप, अकार उकार मकार से ३नों शरीर, ३नों अवस्थाओं व सभी त्रिपुटियों की उत्पत्ति	Cap
3	May 03 .mp3	32	⊕	भागवत्-२		भगवान की कथा से भगवान के **नि॰नि॰, स॰नि॰, स॰सा॰** ३नों रूपों का ज्ञान हो जाता है, ज्ञान की गुरु-परम्परा, अज्ञान का विरोधी ज्ञान ही है।	
4	May 04 .mp3	34	⊕	⊕		**मुक्तिकोपनिषद –** अपने निनि॰ स्वरूप के ज्ञान हेतु भगवान राम का हनुमान को वेदांत की शरणागति का निर्देश, ११८० उपनिषदों में माण्डूक्य श्रेष्ठतम है।	
5	May 05 .mp3	31	⊕	भागवत्-३		श्रीमद्भागवत्-प्रथमस्कंध-**प्रथम+अंतिम** श्लोक :- भ॰के ३रूप – **स॰नि॰**/ईश्वर, **स॰सा॰**/विष्णुअवतार **व नि॰नि॰**/ब्रह्म निरूपण	Imp
6	May 06 .mp3	55	⊕	माण्डूक्य १		अर्थ सहित अर्थववेद का शान्ति मंत्र, भ॰राम द्वारा माण्डूक्य उप॰ उपदेश, **ओंकार का स्वरूप निरूपण, हमारा आत्मा ही ब्रह्म है**	
7	May 07 .mp3	30	⊕			भगवान में प्रेम ही भक्ति है-स्वामी सखा पुत्र या शत्रु चाहे जिस भाव से, भगवान अमृत हैं वे तो अमर ही बनाते हैं, दृ॰कंस,रावण	
8	May 08 .mp3	49	⊕	माण्डूक्य २		भ॰राम द्वारा माण्डूक्य का उपदेश, संसार ओंकार का ही विस्तार है, सब ब्रह्म है, ब्रह्म ही हमारा आत्मा है आत्मा ही ब्रह्म है	
9	May 09 .mp3	29	⊕			यमुना-कर्म, गंगा-उपासना, सरस्वती-ज्ञान **आध्यात्मिक त्रिवेणी है**, मीराबाई की कथा, राम भक्ति श्रेष्ठतम्-भरत विभीषण का दृष्टान्त	
10	May 10 .mp3	42	⊕	माण्डूक्य ३		ब्रह्म आत्मा एकत्व, ओंकार के **मायाकृत प्रथम ३ चरण** तथा इनके निषेध व विलक्षण ४थे चरण – **तुरीय आत्म तत्व निरूपण**	संपूर्ण
11	May 11 .mp3	30	⊕			भगवान राम-शबरी भेंट प्रसंग तथा भगवान का शबरी को नवधा भक्ति का उपदेश	
12	May 12 .mp3	37	⊕	माण्डूक्य ४		संक्षेप में माण्डूक्य उ॰ निरूपण तथा **रामोत्तरतापनी एवं गोपालोत्तरतापनी उपनिषद** का माण्डूक्य से तुलनात्मक विवेचन	
13	May 13 .mp3	30	⊕			जीव के कल्याण हेतु त्रि॰ वेद अनिवार्य है, वेद अनुग्रह में **संत एवं गुरु महिमा**, भगवान की समुद्र से व संतों की मेघों से तुलना	
14	May 14 .mp3	39	⊕	⊕		गीता २/१२: सभी देह मेरी मायाकृत दृश्यमान मंदिर हैं, उनमें बैठकर देखने वाला मैं एक ही देव हूँ, **देव नित्य हैं व दृश्य नाशवान**	Imp
15	May 15 .mp3	30	⊕			**नवधा भक्ति निरूपण**-प्रथम द्वितीय तृतीय चतुर्थ एवं पंचम भक्ति विवेचना	
16	May 16 .mp3	39	⊕	⊕	⊕	गीता २/१२-१५: देह दृश्य हैं उनका द्रष्टा मैं देव हूँ,**देव नित्य हैं** दृश्य नाशवान है,इंद्रिय-विषय संपर्क जनित **सुख दुःख अनित्य हैं**	विशेष
17	May 17 .mp3	30	⊕			भक्ति ज्ञान-वैराग्य की माँ,ब्रह्म का **नि॰नि॰-स॰सा॰ स्वरूप निरूपण**-सामान्य/प्रकट अग्नि का दृष्टांत, सभी कर्म ज्ञानाग्नि से भस्म	
18	May 18 .mp3	50	⊕	⊕	⊕	गीता २/१६: **सत्-असत् २ ही पदार्थ हैं**,जा॰स्व॰सु॰ **दृश्य जगत असत्** है,नि॰नि॰सच्चि॰**द्रष्टा सत् है**, अर्जुन वही तेरा स्वरूप है	Imp
19	May 19 .mp3	31	⊕	⊕		कक्षाक्रम में तीसरी कक्षा ज्ञान की है। **संत और सेठ का दृष्टांत** :- जीव ही सेठ/श्रेष्ठ है जिसे अपने वास्तविक स्वरूप रूपी धन का ज्ञान नहीं है भगवान जीव के हृदय में ही बसते हैं। शरीर घर, जीव सेठ व अंतःकरण चौका है। जा॰स्व॰सु॰ रूपी ३ हाथ पृथ्वी को विवेक की कुदाल से हटाने पर परमप्रकाश रूप सच्चिदानंद ब्रह्म ही बचता है जो जा॰स्व॰सु॰ तीनों को प्रकाशता है।	अ
20	May 20 .mp3	39	⊕	⊕	⊕	गीता २/१६: परस्पर विलक्षण **द्रष्टा-दृश्य २ ही वस्तु हैं**, मैं द्रष्टा व संसार दृश्य है, मैं सच्चिदानंद हूँ जगत जड़ दुःखरूप माया है	Imp
21	May 21 .mp3	39	⊕	⊕	⊕	गीता २/१६: **सत्-असत्२ही तत्व हैं**,सत्+चिद+आनंद **ब्रहम द्रष्टा** है,असत्+जड़+दुःख **माया दृश्य** है,अर्जुन,सत् ही तेरा स्वरूप है	विशेष
22	May 22 .mp3	28	⊕			आत्मारूपी चिदाकाश में सुषुप्ति रूपीमाया-मेघ की जा॰-स्व॰ बरसात अथवा नाम-रूप बूँदें हैं, **असंग आत्मा ही हमारा स्वरूप है**	
23	May 23 .mp3	38	⊕	⊕	⊕	गीता २/१६: **सत्-असत्२ही तत्व हैं,** जा॰स्व॰सु॰रूपी **जगत** सदा नहीं रहता अतः झूठा-**असत्** हैं, सदा रहने वाला **ब्रह्म सत्** है	विशेष
24	May 24 .mp3	32	⊕	⊕		लक्ष्मण का भगवान राम से प्रश्न-१ ज्ञान २ वैराग्य ३ माया ४ भक्ति ५ ईश्वर और ६ जीव क्या हैं? भगवान राम द्वारा **माया का निरूपण** : अपनी देह को 'मैं' व देह के सम्बंधियों को 'मेरा' मानना ही माया है, सभी देह क्षण मात्र में मेरी माया से बन जाते हैं	1 =
25	May 25 .mp3	57	⊕	⊕		ज्ञानकाण्ड वेद का शिरोभाग है ऐसे ही मनुष्य देह सभी देहों में, भारतवर्ष सब देशों में, उत्तराखण्ड पूरे भारत में व गंगा सभी नदियों में श्रेष्ठ है। अनेक पुण्यों के फल स्वरूप इनके अनुग्रह से मनुष्य अपने **'सत्-चित्-आनंद'** से पूर्ण **'पुरुष'** स्वरूप के **ज्ञान से** अपनी आत्मा में अपनी आत्मा से ही तृप्त होकर **पूर्णकाम** हो जाता है ।	ब
26	May 26 .mp3	30	⊕	⊕		**माया ईश्वर जीव निरूपण** : विद्या-अविद्या माया के २ रूप हैं, ब्रह्म का विद्या-माया में प्रतिबिम्ब सर्वज्ञ ईश्वर एवं अविद्या-माया में प्रतिबिम्ब अल्पज्ञ जीव होता है जो अपने स्वरूप के अज्ञान के कारण भवकूप में गिर जाता है, विद्यामाया ईश्वर प्रेरणा से जगत का सृजन करती है।	2 =
27	May 27 .mp3	45	⊕	⊕	⊕	गीता २/१६: **सत्-असत् २ही तत्व हैं** जो 'सत्' है वह चिद व आनंद भी है और 'असत्'- जड़ एवं दुःखरूप भी है, **सत् का स्वरूप ब्रह्म है, असत् मायारूप है।**	Imp
28	May 28 .mp3	28	⊕	⊕		**ज्ञान वैराग्य ईश्वर जीव निरूपण** : **ज्ञान** वह है जहाँ देश काल वस्तु तीनों नहीं हैं केवल ब्रह्म ही ब्रह्म है, अज्ञानरूपी माया है ही नहीं, अष्टसिद्धियों को तृणवत् जानना **वैराग्य** है, **जीव** – माया ब्रह्म ईश्वर व स्वयं से अनभिज्ञ है, **ईश्वर** – मायापति प्रेरक नित्यमुक्त एवं सर्वज्ञ है।	3 =
29	May 29 .mp3	51	⊕	⊕		गीता २/१६,१७: रोज़ आने-जाने वाली जा॰-स्व॰-सु॰ ३नों दृश्य/माया है, ४था सदा रहने वाला अपना स्वरूप द्रष्टा ही सत्य है, अविनाशी तो एक द्रष्टा ही है वह सच्चिदानंद मैं ही हूँ वही तेरा स्वरूप है, ये द्वैत दृश्य माया मात्र है व अद्वैत द्रष्टा ही सत्य है	Imp
30	May 30 .mp3	40	⊕	⊕		त्रिकाण्डमय वेद के 'कर्म भक्ति ज्ञान' ३ दण्ड हैं, ज्ञान दण्ड धारण करने वाले संत **'एकदण्डी'** कहलाते हैं, भगवान से प्रेम ही भक्ति है, इसके पुत्र ज्ञान और वैराग्य हैं, ज्ञानी भक्त नामरूप तरंगों में अस्ति-भाति-प्रिय रूप जल को ही देखता है	
31	May 31.mp3	46	⊕	विद् धातु		१ **विद्ज्ञाने** – स्वर व्यंजन रूप वेद २ **विद् सत्तायाम** – व्यापक ज्ञान/सच्चिदानंद ब्रह्म ३ **विद् विचारणे** – विशेष ज्ञान – ईश्वर/जीव ४ **विद् लाभे** – ब्रह्म ज्ञान	Imp
32	May 32.mp3	42	⊕	⊕	⊕	**आरुणि का श्वेतकेतु को ज्ञानोपदेश**-एक स्वर्ण के ज्ञान से सभी आभूषणों का ज्ञान होजाता है, कार्य अपने कारण से अभिन्न होताहै	विशेष
33	May 33 .mp3	36	⊕	⊕		वेद में ब्रह्म के २ लक्षण बताये हैं, **१ स्वरूप लक्षण** – सत् चित आनंद **२ तटस्थ/उप लक्षण** – एकदेशीय, व्यावर्तक एवं कदाचित	**
34	May 34 .mp3	40	⊕			तैत्रीय उप॰: सृष्टिक्रम-प्रपंच का **अध्यारोप-अपवाद रीति से ब्रह्म तत्व निरूपण**, प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से है, **अन्न चक्र**	
35	May 35 .mp3	51	⊕	⊕		अध्यात्म उपनिषद : **तीन शरीर** – स्थूल सूक्ष्म कारण , **तीन अवस्थाऐं** – जागृत स्वप्न सुषुप्ति – इनके **स्वरूप एवं धर्म**	Imp
36	May 36 .mp3	37	⊕	⊕	⊕	अध्यास-अपवाद साघन द्वारा निष्प्रपंच **ब्रह्म तत्व एवं जीव का स्वरूप निरूपण**, जीव-ब्रह्म एकत्वम्, **अनादि के ६ प्रकार-१** ब्रह्म २ माया ३ ब्रह्म-माया सम्बन्ध ४ ईश्वर ५ जीव ६ ईश्वर-जीव सम्बन्ध। ब्रह्म अनादि-अनंत है और शेष पाँच अनादि-सान्त हैं	अति विशेष
37	May 37 .mp3	47	⊕	⊕		**प्रकाश के पाँच प्रकार** :१सूर्य २चन्द्रमा ३तारागण ४विद्युत ५अग्नि-ये सब अज्ञानरूप हैं,हम **ज्ञानप्रकाश** ही इन ५चों को प्रकाशते हैं	Imp
38	May 38 .mp3	31	⊕			सर्व प्रथम ब्रहमा को शोक-मोहग्रस्त देख भ॰नारायण द्वारा ज्ञानोपदेश, जिसके भगवान ही सब कुछ हैं भ॰को वह भक्त सर्वप्रिय हैं	
39	May 39 .mp3	42	⊕	⊕		**ब्रह्म**-सत् चित् आनंद, **जीव**-हृदय के भीतर अनंत चेतन आनंद ज्योति, वही हमारा **पुरुष** स्वरूप है, अपना **आत्मा ही सर्वप्रिय है**	Imp

CD # 52 * JUN 2012 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	Jun 01.mp3	42				गीता २/१६-१८: **सत्-असत् २ही वस्तु हैं,** सदा रहने वाला **सत्**, बदलते रहने वाला दृश्य **असत्** है, हमारा द्रष्टा आत्मा सच्चि०है	Jmp
2	Jun 02 .mp3	45				गीता २/१७-२२: **मैं आत्मा और मेरी माया-अनात्मा २ वस्तु हैं,** मैं द्रष्टा-आत्मा अकर्म अविनाशी व दृश्य-मायाकृत विनाशी देह अनात्मा हैं, सब कर्म देह में हीं हैं, सभी देह वस्त्रों के समान बदलते रहते हैं उन सबके भीतर बैठकर देखने वाला मैं एक ही हूँ	Jmp ****
3	Jun 03 .mp3	35				गीता २/२२-२५: सभी देह जड़, अनित्य तथा देहधारी ज्ञानवान नित्य पुरुष है, हमारा **आत्मा आकाश से भी सूक्ष्म और महान है**	
4	Jun 04 .mp3	51				गीता २/२३-२५: अर्जुन हमारा आत्मा **अछेद्य अदाह्य अशोष्य व्यापक अचल अव्यक्तनित्य मुक्त अचिंत्य अकर्म अविकारी** है ये मायाकृत शरीर विकारी एवं नाशवान हैं अतः शोक अनुचित है क्यों कि सच्चिदानंद ब्रह्म आत्मा ही तुम्हारा वास्तविक स्वरूप है	Jmp ****
5	Jun 05 .mp3	33				गीता २/२३-२५: तुम्हारा वास्तविक स्वरूप देह इ०म०बु०प्राण नहीं अपितु सच्चि०घन आत्मा है अतः वह अविकारी अविनाशी है	***
6	Jun 06 .mp3	47				गीता २/२३-२५: आत्मा स्वभाव से ही सच्चिदानंद हैअतः अजन्मा अविकारी अविनाशी आत्मा का नाश करने में कौन समर्थ है	Jmp
7	Jun 07 .mp3	32				अध्यात्म रा०-सीताराम जगत के मातापिता हैं,सीता ही जगत उत्पन्न करती हैंराम केवल निमित्त हैं,श्रीरामजयरामजयजयराम-महिमा	
8	Jun 08 .mp3	21				गीता २/२३-२६: आत्मा अजन्मा नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त अचल अविकारी अविनाशी अव्यक्त सनातन है,संसार का ही नाश होता है	Jmp
9	Jun 09 .mp3	30				सीताराम की संतान ये **संसार सीताराम का ही स्वरूप है,**जीवात्मा राम एवं सब शरीर सीता के अंश हैं,सीता माया व राम पुरुष है	Jmp
10	Jun 10 .mp3	42				गीता २/३०: **देह देही २ तत्व हैं,** दिखाई पड़ने वाले देह हैं और उन देहों में बैठ कर देखने वाला देही है, अर्जुन हमारा तुम्हारा स्वरूप देह नहीं द्रष्टा देही है जो नित्य अबध्य अविनाशी है, अनेक शरीरों में एक ही द्रष्टा है वही साक्षी चेतन अद्वय ब्रह्म है	Jmp ****
11	Jun 11 .mp3	32				सीताजी द्वारा **भ०राम का नि०नि०स्वरूप निरूपण** : राम सबसे महान प्रकृति से परे व सीमा अद्वितीय सच्चि० निरुपाधि ब्रह्म हैं	
12	Jun 12 .mp3	55	देहसंरचना			गीता २/३०: पुरुष ही सत् है देहों का समूह संसार असत् छाया मात्र हैं,सब देहों में देखने वाला द्रष्टा सच्चिदानंद पुरुष मैं ही हूँ	
13	Jun 13 .mp3	36	३देह/३अवस्थाऐं/ ५कोष-मायाकृतहै			गीता २/३०: **देह देही २ तत्व हैं** दिखाई पड़ने वाले देह हैं और उन देहों में बैठ कर **देखने वालादेही हमारा तुम्हारा स्वरूप है** मैं द्रष्टा-आत्मा अकर्म अविनाशी व दृश्य-मायाकृत विनाशी देह अनात्मा हैं, **सब कर्म देह में ही हैं**	
14	Jun 14 .mp3	27				भ०राम का नि०नि० स्वरूप सर्वत्र व्यापक सच्चिदानंद परमब्रह्म अद्वितीय अकर्म जीवों का अपना आत्मा है, सीता भगवान राम की महामाया शक्ति प्रकृति हैं जो राम की प्रेरणा-स्फूर्ति पाकर जगत की उत्पत्ति पालन संहार करती हैं, सभी कर्म प्रकृति में हैं	Jmp **
15	Jun 15 .mp3	32				गीता २/३०: दिखाई पड़ने व जन्मने-मरने वाले **देह** तथा जन्म-मरण रहितदेखने वाला **देही २ तत्व हैं, जीव ईश्वर की देह रचना**	***
16	Jun 16 .mp3	26				**सीता का स्वरूप** मूल प्रकृति हैं जो सच्चिदानंद राम की प्रतिबिम्ब रूप सत्ता स्फूर्ति पाकर जगत की उत्पत्ति पालन संहार करती है	
17	Jun 17 .mp3	42				गीता १३/२-३: शरीरों को **खेत/क्षेत्र** कहते हैं व इसमें रहने-जानने वाला किन्तु असंग **किसान/क्षेत्रज्ञ** है, सभी क्षेत्रों में क्षेत्रज्ञ **'मैं'** ही बैठ कर देख रहा हूँ अतः अर्जुन तुम स्वयं को मेरा ही स्वरूप जानो, ईश्वर-जीव सबके देह क्षेत्र माया है-**दृष्टांत रानी चुड़ैला**	Jmp ****
18	Jun 18 .mp3	34				सीताजी द्वारा **भ०राम का नि०नि०** एवं **स्वयं का स्वरूप निरूपण,** सहस्त्रमुख रावण की कथा-प्रसंग	
19	Jun 19 .mp3	51				गीता ४/१७: **कर्म विकर्म** अकर्म निरूपण, कर्म की गति अति गूढ़ है, **वेद विहित कर्म ही धर्म है, कर्म** : सामान्य एवं विशेष धर्म	
20	Jun 20 .mp3	29				सीताराम जगत के मातापिता है, सीता शक्ति व राम शक्तिमान हैं, **सीता का स्वरूप स०सा०व राम का नि०नि० है,** राम सत चित आनंद से पूर्ण पुरुष व सीता उनकी छाया के समान हैं तथा राम से प्रेरणा-स्फूर्ति पाकर जगत की उत्पत्ति पालन संहार करती हैं	Jmp **
21	Jun 21 .mp3	49				गीता ४/१७: **कर्म विकर्म** अकर्मनिरूपण,सारा संसार मायाकृत त्रैगुण्य तथा ४ वर्णरूप है,**कर्म**-सामान्य व वर्णाश्रमानुसार विशेष धर्म	
22	Jun 22 .mp3	31				अग्नि की भाँति भगवान के भी व्यापक अव्यवहारिक **एक** निनि० एवं प्रकट व्यवहारिक **अनेक** ससा० स्वरूप हैं, स०सा०नाशवान है	1
23	Jun 23 .mp3	34				गीता ४/१७: कर्म विकर्म **अकर्म** निरूपण, सत्-चित्-आनंद से पूर्ण सब कर्मों का आधार अधिष्ठान **अकर्म** है वही तेरा स्वरूप है	Jmp
24	Jun 24 .mp3	29				अग्नि की भाँति भग०के भी व्यापक अव्यवहारिक निनि० व प्रकट व्यवहारिक अनेक ससा०स्वरूप हैं, निनि०सत् व ससा०असत् है	2
25	Jun 25 .mp3	38				गीता ४/१७: कर्म विकर्म **अकर्म** निरूपण, हमारा स्वरूप अधिष्ठानआत्मा अकर्म है, सारे कर्म आत्मा में अध्यस्थ प्रकृति में हैं	
26	Jun 26 .mp3	29				भगवान विष्णु का त्रि०वेद का सर्वप्रथम ब्रह्मा को उपदेश, भगवान राम द्वारा वेद विहित कर्म का स्वयं अभिनय कर सबको शिक्षा	
27	Jun 27 .mp3	40			१	गीता १५/१: **ये दृश्यमान संसार मायाकृत पीपल वृक्ष है** जिसकी मूल ऊपर व शाखाऐं नीचे हैं,यह देखने में तो अविनाशी लगता है किन्तु वस्तुतः यह निरंतर नाश के प्रवाह में बह रहा है, शुभ-अशुभ कर्म इसके फूल व सुख-दुःख फल हैं,ज्ञानरूपी फल ही इष्ट है	Jmp ****
28	Jun 28 .mp3	30				सीताराम जगत के मातापिता है, भ०राम ने मनुष्यों को शिक्षा हेतु मनुष्य अवतार लिया वेद विहित कर्म आदि करके दिखलाने हेतु	
29	Jun 29 .mp3	35			२	गीता १५/१: **ये दृश्यमान संसार मायाकृत पीपल वृक्ष है** जिसकी मूल ऊपर व शाखाऐं नीचे हैं, मूल सत्य है शाखाऐं मिथ्या है	****
30	Jun 30 .mp3	35				भ०राम ने मनुष्यों को त्रि०वेद की शिक्षा हेतु मनुष्य अवतार लिया,दृष्टान्त - गुरुगृह शिक्षा, एकपत्नि व्रत, सीता वियोग-करुणा लीला	
31	Jun 31 .mp3	41			३	गीता १५/१: संसार रूपी पीपलवृक्ष के भगवान अविनाशी मूल हैं जिसमें ये छायावत् संसार उत्पन्न-विनाश को प्राप्त होता रहता है	***
32	Jun 32.mp3	26				भ०राम का पंचवटी में नारद सत्कार, सीता-विरह लीला द्वारा कामी एवं विरक्त को शिक्षा,अज्ञानी भक्त की पुत्रवत् रक्षा भ०का प्रण	
33	Jun 33 .mp3	50			४	गीता १५/१: **संसार एक पीपल वृक्ष है** जिसका मूल सच्चि०परमात्मा है, संसार के कार्य हेतु **उपादान** व **निमित्त** कारण अनिवार्य है	****
34	Jun 34 .mp3	39			५	गीता १५/१: ये संसार एक पीपल वृक्ष है जो **'सनातन अविनाशी बीज/मूल भगवान'** का ही विस्तार है, वह एक ही अपनी माया से अनेक रूपों में भासते हैं, इस नश्वर संसार का चिंतन त्याग कर परमेश्वर से निरंतर प्रीति ही वेद के तात्पर्य को जानना है	Jmp ****
35	Jun 35 .mp3	26				भ०राम का शबरी को **'नवधा भक्ति'** का उपदेश :- १-संत सेवा २-मेरी कथा में प्रेम ३-गुरुपद सेवा ४-मेरा गुण गान ५-मंत्रजाप	A
36	Jun 36 .mp3	43			६	गीता १५/१: **'कार्यरूप'** संसार एक वृक्ष है जिसका **'कारण'**मूल भगवान ऊपर है, कार्य से अभिन्न **कारण सत्य है व कार्य मिथ्या है**	Jmp
37	Jun 37 .mp3	27				**'नवधा भक्ति'**:- ६-शम दम शील व बहुकर्म विरति ७-जगत को राममय देखना व मुझसे अधिक संत को जानना	B
38	Jun 38 .mp3	36			७	गीता १५/१-६: इस संसार वृक्ष की मूल परमात्मा है वही हमारी आत्मा है । त्रिगुणरूप जल से बढ़ी विषय-भोग कोपलों वाली तिर्यक योनिरूप शाखाऐं इनों लोकों में फैली है। इस अहतां ममता एवं वासना रूप दृढ़ मूलों वाले वृक्ष को दृढ़ वैराग्यरूप शस्त्र से काटने पर, जिसकी वासनाऐं नष्ट हो गयी हैं वह परमपद रूप परमेश्वर को पा लेता है और भवकूप में पुनः नहीं आता ।	**** Jmp ****
39	Jun 39 .mp3	41			८	गीता १५/६-७: वह मेरा परमधाम है जहाँ सूर्य चन्द्र अग्नि का अल्पजड़ प्रकाश नहीं होता, वह स्वयं ज्ञानप्रकाश है-'भवकूप मुक्ति'	Jmp
40	Jun 40 .mp3	30				**'नवधा भक्ति'** : ८-संतोष व परदोष न देखना ९-छल रहित, सरल हृदय व सुख दुःख में सम, जिसे केवल मेरा ही भरोसा है	C
41	Jun 41 .mp3	40			९	गीता १५/६-७: सब शरीरों की नित्य प्राप्त जीवात्मा मैं ही हूँ,ये शरीर मेरी इच्छा से बनते और मिट जाते है, **दृष्टांत रानी चुड़ैला**	Jmp
42	Jun 42 .mp3	30				**'नवधा भक्ति'** : ९-छल रहित,सरल हृदय व सुख दुःख में सम, जिसे केवल मेरा ही भरोसा है,जीव मेरा सच्चिदानंद स्वरूप ही है	D
43	Jun 43 .mp3	31			१०	गीता १५/६: भ० के परमधाम प्राप्त होने पर जीव जन्म-मरण से छूट जाता है, वह ज्ञान ही प्रकाश सूर्य-चन्द्र का भी प्रकाशक है	****
44	Jun 44 .mp3	29				सीताराम जगत के मातापिता हैं अतः जगत सीताराम का ही स्वरूप हैं। शरीर सीता व उनमें बैठकर देखनेवाले राम का स्वरूप हैं	Jmp
45	Jun 45 .mp3	41			११	गीता १५/६-७: सूर्य-चंद्र जहाँ नहीं प्रकाशते मैं वह परमचेतनप्रकाश स्वभाव से ही सच्चिदानंदहूँ, वही मेरे अंश जीव का स्वरूप हैं	Jmp
46	Jun 46 .mp3	46			१२	गीता १५/७-१५: **अस्पष्ट रिकॉर्डिंग**- ७ से १५ श्लोक की विवेचना संक्षेप में, **गर्भोपनिषद**	
47	Jun 47 .mp3	36			१३	गीता १५/१५: मैं सच्चि०ब्रह्म सब शरीरों में जीवात्मा रूप से प्रविष्ट हूं, मुझसे ही स्मृति-विस्मृति है, वेदों का वेत्ता+वेद्य मैं ही हूँ	Jmp
48	Jun 48 .mp3				१४	गीता १५/१५: सभी जीवों के हृदय में जीवात्मा-रूप में मैं ही स्थित हूँ, अनंतकोटि ब्रह्माण्ड मेरी माया से क्षणमात्र में बन जाते हैं	